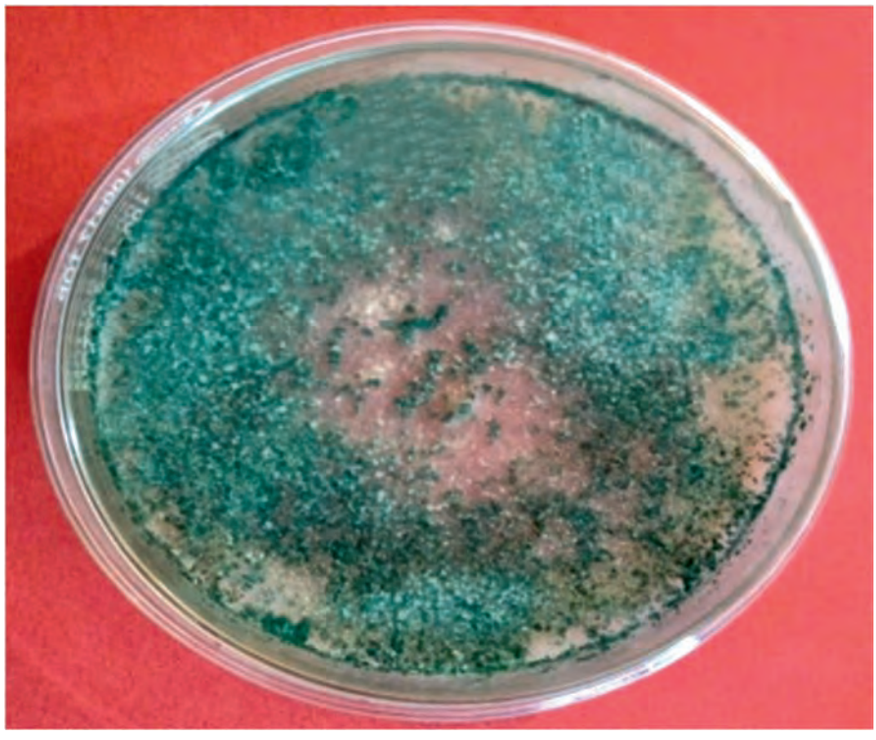


सावधानियां

- ट्राइकोडर्मा का कल्चर छह महीने से ज्यादा पुराना न हो।
- बीज को ट्राइकोडर्मा से उपचारित करने के बाद सीधी धूप न लगने दें।
- ट्राइकोडर्मा का उपयोग कवकनाशी रसायन के साथ न करें।
- बीज उपचार ट्राइकोडर्मा से करते समय छायादार व शुष्क स्थान पर ही करें।
- ट्राइकोडर्मा को प्रमाणित संस्था या कम्पनी से ही खरीदना चाहिए।
- ट्राइकोडर्मा को कार्बनिक खाद में मिलाने के बाद ज्यादा समय तक न रखें।

ट्राइकोडर्मा का खेती में उपयोग

आकाश पाण्डेय*

"ट्राइकोडर्मा राइजोस्फियर में कार्य करने वाला सूक्ष्मजीव है, जो प्राय: कार्बनिक अवशेषों पर पाया जाता है। ट्राइकोडर्मा हर्जियानम एवं विरिडी ये दो प्रजातियां विशेष रूप से प्रचलित हैं।"

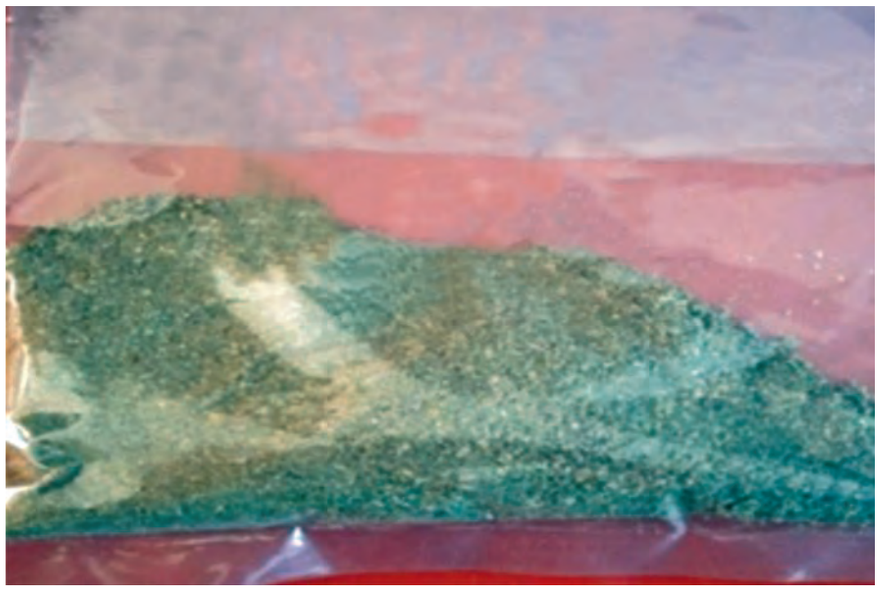
भारतीय मानक के अनुसार ट्राइकोडर्मा उत्पादन की गुणवत्ता

- उत्पाद में नमी 8 प्रतिशत पी-एच 7 होना चाहिए।
- कॉलोनी फार्मिंग यूनिट कम से कम 2×106 प्रति ग्राम हो।
- ट्राइकोडर्मा विरोधी सूक्ष्मजीव मार क्षमता हों।

ये जैव कवकनाशी हैं, जो विभिन्न प्रकार के कवकजनित रोगों को रोकने में सहायक हैं।

ट्राइकोडर्मा के लाभ

- ट्राइकोडर्मा मृदा में कार्बनिक पदार्थों के अपघटन को तेजी से बढ़ाता है। जैव उर्वरक की तरह काम करता है।
- पौधों की वृद्धि में सहायक होता है तथा यह फॉस्फेट व सूक्ष्म तत्वों को घुलनशील बनाता है।
- यह पौधों में एंटीऑक्सीडेंट को बढ़ाने में मदद करता है। ट्राइकोडर्मा को मृदा में मिलाने के बाद फलों के पोषक तत्वों की गुणवत्ता खनिज तत्व में तेजी से वृद्धि होती है।
- रोगकारक जीवों को रोकता है। उनको मारकर पौधों को रोगमुक्त करता है।



ट्राइकोडर्मा चूर्ण

ट्राइकोडर्मा के प्रयोग की विधियां

- बीजोपचार
- कंद उपचार
- सीड प्राइमिंग
- मृदा शोधन
- नर्सरी उपचार
- पौधा उपचार
- पौधों पर छिड़काव

*सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश)